ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 172-175**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

युवा असंतोष : मुजफ्फरपुर जिला के स्नातक पास युवाओं के संदर्भ में समाजशास्त्रीय अध्ययन

सचिन शर्मा

शोध अध्येता– समाजशास्त्र, NET, JRF (UGC), बी0 आर0 अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-27.10.2025, Revised-05.11.2025, Accepted-12.11.2025 **E-mail: sachinsharma0621@gmail.com**

सारांशः आज देश के हजारों–लाखों युवकों में असन्तोष एवं आक्रोश पाया जाता है, सक्रियता दिखायी पड़ती है। वे आज कई प्रकार के तनावों से ग्रसित हैं। युवकों में पाया जाने वाला तनाव एवं असन्तोष कई रुपों में प्रकट होता है। कई युवक प्रदर्शनों, तोड़–फोड़, आगजनी, मारपीट, हड़तालों, घेराव एवं हिंसात्मक दंगों में भाग लेते हैं। कभी किसी कालेज या विश्वविद्यालय में हिंसा की अग्नि भड़क उठती है तो कभी किसी कारखाने में। कभी भाषा के नाम पर आन्दोलन चलते हैं तो कभी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के नाम पर। कभी छात्र आक्रोश प्रशासन या व्यवस्था के विरुद्ध भड़क उठता है तो कभी महँगाई, आरक्षण या भ्रष्टाचार के विरुद्ध आन्दोलन के रूप में। कहीं जाति के नाम पर तो कहीं वर्ग के नाम पर और कहीं प्रान्तीयता व धर्म के नाम पर झगड़े होते हैं। युवा सक्रियता या असन्तोष अक्सर विद्यार्थी अनुशासनहीनता के रूप में प्रकट होता है। उप–कुलपतियों एवं नेताओं का समय–समय पर घेराव होता है। आखिर यह सब कुछ क्या और क्यों है ? युवकों में अति सक्रियता या असन्तोष का प्रमुख कारण उनका मौजूदा व्यवस्था में असन्तुष्ट होना है। आज का छात्र न तो सुगमता से अपनी आकांक्षाओं को और न ही माता–पिता की अपेक्षाओं को पूर्ण कर पाता है। वह जीवन में कई स्वप्न सँजोता है, पर यथार्थ के धरातल पर उन्हें टूटते हुए देखता है। यह सारी परिस्थिति उसमें सक्रियता या असन्तोष बढ़ाने में सहायता करती है। सार्वजनिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार भी छात्रों को व्यवस्था के विरुद्ध उठ खड़े होने को बाध्य कर देता है। आज युवकों में तरुणाई का उफान अवश्य है, जोश है, कुछ कर गुजरने की लालसा है परन्तु उनमें से अधिकांश दिशाहीन प्रतीत होते हैं।

कुंजीभूत शब्द– आक्रोश, असन्तोष, ठोकरें, सुगमता, तरूणाई, दिशाहीन, ।

भूमिका– युवा असन्तोष का तात्पर्य है– युवा वर्ग का मौजूदा व्यवस्था से असन्तुष्ट होना। आज भारतीय युवकों को अनुशासनहीन माना जाता है। कहा जाता है कि वह तोड़–फोड़ में विश्वास करता है, अशान्ति फैलाता है, जनजीवन के मार्ग में बाधा उपस्थित करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि युवकों में व्याकुलता पायी जाती है, वे आज असन्तुष्ट हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् छात्र–आन्दोलनों की घटनाएँ व्यापक रूप ग्रहण करती रही है। समय–समय पर विश्वविद्यालयों तथा कालेजों में हड़ताल, पथराव, प्राध्यापकों का अनादर, फर्नीचर की तोड़–फोड़, सार्वजनिक सम्पति की हानि, परीक्षाओं का बहिष्कार, जलूस, प्रदर्शन, घेराव तथा मारपीट आदि की घटनाएँ समाचार पत्रों में छपती रही है। आखिर प्रश्न यह उठता है कि छात्रों में असन्तोष क्यों पाया जाता है ? इस असन्तोष के लिए कौन उतरदायी है ?

दमन की नीति या बल–प्रयोग के द्वारा किसी असन्तोष को कुछ समय के लिए दबाया जा सकता है परन्तु समस्या को हल नहीं किया जा सकता। आज युवा तनाव या छात्र असन्तोष एक सामाजिक समस्या के रूप में है। यह असन्तोष सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र के लिए एक चुनौती हैं। आज युवा वर्ग इस समस्या से ग्रसित है और कुछ कर गुजरने को व्याकुल है। बड़े–बड़े शिक्षाशास्त्री, राजनेता और प्रशासक इस समस्या की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने और इसे सुलझाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करते रहे हैं। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि समस्या आज भी ज्यों–की–त्यों बनी हुई है। आखिर ऐसा क्यों है ? इस सम्बन्ध में अध्ययन एवं शोध की अत्यन्त आवश्यकता है।

वर्तमान में संसार के अनेक देशों में युवा तनाव, सक्रियता या छात्र असंतोष देखने को मिलता है। युवकों ने विश्व के अनेक देशों में महत्वपूर्ण रचनात्मक भूमिका निभायी है। अनेक देशों में युवकों ने समय–समय पर सरकार की नीतियों का विरोध किया है और राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योग दिया है। वर्तमान में भारत में युवा सक्रियता अनेक प्रकार की निराशाओं, असंतोष और दिशाहीनता से ग्रसित है। यहाँ समय–समय पर होने वाले प्रदर्शन, आन्दोलन, तोड़–फोड़, घेराव आदि युवा सक्रियता या छात्र असन्तोष की ही अभिव्यक्ति है। युवा असन्तोष के लिए अनेक शब्दों जैसे – युवा तनाव, युवा असन्तोष या विद्यार्थी असन्तोष जैसे शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। यहाँ युवा असन्तोष के नाम पर अनुशासनहीनता, नियमहीनता, तोड़–फोड़, आगजनी और पथराव तक को उचित माना जाता है। इस रूप में युवा असन्तोष एक सामुदायिक समस्या है।

युवकों में आज असन्तोष, निराशा एवं तनाव पाया जाता है। इन सब के परिणामस्वरुप युवक किसी भी छोटी–मोटी घटना को लेकर आन्दोलन करने को तैयार हो जाते हैं। आखिर ऐसा क्यों है ? भारतीय संदर्भ में युवा असन्तोष पर विचार करने पर हम पाते हैं कि यहाँ स्वतन्त्रता–प्राप्ति के 38 वर्षों के बाद भी युवक अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है, शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी वह आसानी से नौकरी प्राप्त नहीं कर सकता। वह अपने को असहाय, असमर्थ और दीन–हीन महसूस करता है। वह अपनी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को पूर्ण होते हुए नहीं देखता है। परिणामस्वरूप उसमें असन्तोष, निराशा और तनाव पाया जाता है। वह विद्रोहात्मक रूख अपना लेता है; प्रदर्शन, तोड़–फोड़ और घेराव के लिए तैयार हो जाता है। परिस्थितियाँ उसे विवेकहीन तक बना देती हैं और वह उचित–अनुचित की चिन्ता किये बिना समाज–विरोधी या हिंसात्मक कार्यों में अपने को लगा लेता है।

युवा वर्ग अपनी निराशा और असन्तोष को हिंसात्मक या अहिंसात्मक प्रदर्शनों के द्वारा व्यक्त करता है। इस युवा वर्ग के द्वारा सार्वजनिक रूप से व्यक्त किये जाने वाले असन्तोष को ही युवा असन्तोष के नाम से जाना जाता है। युवा वर्ग अपने आप में शक्ति और साहस महसूस करता है, इसलिए वह अपने असन्तोष और आक्रोश को प्रदर्शनों, हड़तालों, उपद्रवों तथा आन्दोलनों के रूप में व्यक्त करता है। ये सभी युवा असन्तोष की अभिव्यक्तियाँ हैं। भारत में युवा असन्तोष में दिशाहीनता और आन्दोलनकारी प्रवृति अधिक है। होता यह है कि जहाँ युवकों को अपनी शक्ति के प्रदर्शन का कोई निर्माणात्मक या सृजनात्मक स्त्रोत नहीं मिलता, वहाँ वे अपने को असामाजिक कार्यों में लगा देते हैं। शक्ति प्रदर्शन के उचित माध्यम का अभाव तथा देश की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों में व्याप्त असुरक्षा युवा असन्तोष के लिए प्रमुखतः उतरदायी है। युवा असन्तोष को युवकों में व्याप्त उस असन्तोष के रूप में परिभाषित

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

किया जा सकता है जिसकी अभिव्यक्ति हिंसात्मक या अहिंसात्मक आन्दोलनों के रुप में होती है। युवक अपने चारों ओर की परिस्थितियों और समस्याओं से ऊबकर परम्परागत आदर्श–नियमों एवं स्थापित व्यवस्थाओं के विरुद्ध आन्दोलनकारी प्रवृति को अपना लेते हैं और तोड़–फोड़, घेराव, प्रदर्शन, आगजनी, लूट–पाट और हिंसात्मक गतिविधियों में संग्लन हो जाते हैं। भारत के युवकों में व्याप्त असन्तोष, निराशा और तनाव का परिणाम है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं– क) युवाओं में असंतोष के पीछे उत्पन्न परिस्थितियों का पता लगाना। ख) देश में होने वाले युवा आन्दोलनों का युवा असंतोष पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन। ग) युवाओं के लिए बनाये गये विभिन्न योजनाओं का युवा असंतोष पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र एवं उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि– प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिला का चयन किया गया है। मुजफ्फरपुर जिला के शहरी मुख्यालय क्षेत्र से 50 स्नातक पास उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यूपर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया है, जो मुख्य रूप से 18 वर्ष से लेकर 42 वर्ष तक के युवा हैं। अध्ययन विषय से संबंधित तथ्यों का पता लगाने के लिए साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से साक्षात्कार प्रविधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए चयनित किये गये उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि एवं तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है :–

तालिका संख्या – 1

आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का परिचय

आयु	उत्तरदाता	प्रतिशत
18 – 24	10	20
24 – 30	15	30
30 – 36	15	30
36 – 42	10	20
कुल –	**50**	**100**

तथ्य विश्लेषण– आयु के आधार पर चयनित किये गये उत्तरदाताओं में अध्ययनरत एवं अध्ययन के पश्चात् व्यवसाय में संलग्न दोनों ही प्रकार के उत्तरदाताओं का चयन किया गया है तथा उनसे प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है :–

तालिका संख्या – 2

क्या आपको लगता है कि वर्तमान समय में युवाओं में असंतोष की स्थिति है ? हाँ/नहीं

आयु	उत्तरदाता	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
18 – 24	10	10	100	00	00
24 – 30	15	15	100	00	00
30 – 36	15	15	100	00	00
36 – 42	10	10	100	00	00
कुल –	**50**	**50**	**100**	**00**	**00**

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि वर्तमान समय में युवाओं में असंतोष की स्थिति है, तो सभी आयु वर्ग के उत्तरदाताओं में 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 3

युवा असंतोष को कैसे दूर किया जा सकता है ? क) आंदोलन के द्वारा ख) रोजगार के अवसर उपलब्ध कराके ग) व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या को दूर करके

आयु	उत्तरदाता	क	प्रतिशत	ख	प्रतिशत	ग	प्रतिशत
18 – 24	10	02	20	06	60	02	20
24 – 30	15	05	33.3	05	33.3	05	33.3
30 – 36	15	03	20	06	40	06	40
36 – 42	10	01	10	04	40	05	50
कुल –	**50**	**11**	**22**	**21**	**42**	**18**	**36**

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि पूछे गये प्रश्न युवा असन्तोष को कैसे दूर किया जा सकता है तो सभी आयु वर्ग के उत्तरदाताओं में 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि आन्दोलन के द्वारा जबकि सभी आयु वर्ग के 42 प्रतिशत उत्तरदाता ने कहा कि रोजगार के अवसर उपलब्ध कराके जबकि 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि भ्रष्टाचार को कम करके ही युवा असन्तोष को दूर किया जा सकता है।

तालिका संख्या – 4

क्या आपको लगता है कि युवाओं को अगर सरकारी नौकरी नहीं मिले तो उन्हें व्यवसाय व अन्य गैर–सरकारी रोजगारों/स्वरोजगार की ओर भी ध्यान देना चाहिए ? हाँ/नहीं

आयु	उत्तरदाता	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
18 – 24	10	07	70	03	30
24 – 30	15	10	66.6	05	33.3
30 – 36	15	12	80	03	20
36 – 42	10	08	80	02	20
कुल –	**50**	**37**	**74**	**13**	**26**

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि युवाओं को अगर सरकारी नौकरी नहीं मिले तो उन्हें व्यवसाय व अन्य गैर सरकारी रोजगारों/स्वरोजगार की ओर भी ध्यान देना चाहिए तो सभी आयु वर्ग के उत्तरदाताओं में 74

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 26 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 5

क्या आपको लगता है कि तकनीकी शिक्षा आज के युवाओं के लिए आवश्यक है ? हाँ/नहीं

आयु	उत्तरदाता	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
18 – 24	10	07	70	03	30
24 – 30	15	10	66.6	05	33.3
30 – 36	15	12	80	03	20
36 – 42	10	08	80	02	20
कुल –	**50**	**37**	**74**	**13**	**26**

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि तकनीकी शिक्षा आज के युवाओं के लिए आवश्यक है तो सभी आयु वर्ग के उत्तरदाताओं में 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

निष्कर्ष– इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषणों के आधार पर निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि युवा हर देश के आधार होते हैं। युवा ऐसी शक्ति है, जो देश के विकास और प्रगति को नई दिशा देते हैं। इनके कंधों पर चलकर एक देश का भविष्य संवरता है। आज का युग युवाओं का युग है उनके सोचनें और विचारने में बहुत ही अंतर आया है। सबसे ज्यादा जोश और उत्साह युवाओं के अंदर देखा जा रहा है। हर देश यह कोशिश करता है कि उनके यहाँ के युवा हर तरह से आत्मनिर्भर बनें। आज समय के साथ–साथ स्थिति में भी परिवर्तन हो रहा है। संस्कृति बदल रही है तथा विचार बदल रहे हैं। लोगों के सोंच में परिवर्तन आयी है। आज का युवा स्वंय को केवल आत्मनिर्भर नहीं बनाना चाहता है, बल्कि वह इससे भी आगे बढ़ना चाहता है। उसको वे हरेक सुख चाहिए जो उसके जीवन में उसके पहुँच से बाहर हो या अन्दर। उसकी सुख की परिभाषा आज अच्छा खाना, पहनना और रहना नहीं है बल्कि वह समाज में स्वंय को सबसे उपर देखना चाहता है। उसे प्रथम स्थान पर रहना ही सच्चा सुख लगता है। आज बेरोजगारी की समस्या भी उतनी ही है जितनी की युवाओं में असन्तोष की समस्या है। युवाओं में असन्तोष आज उसके बहुत कुछ चाहने की वजह से उपज रहा है।

युवाएँ आज समाज में अपने आप को स्थापित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। आज युवाओं में बढ़ रहा असन्तोष उन्हें भटका रहा है। यह असन्तोष युवाओं को भटका रहा है। वह बुरी संगत और बुरी आदतों के शिकार बन रहे हैं। जीवन में जरा सा दुःख हुआ नहीं, कुछ मिलने में कठिनाई हो गयी वो गहरी अवसाद में चले जाते हैं। कहीं न कहीं परिवार व समाज इस असन्तोष का मुख्य कारण होता है। आज सरकारी व्यवस्था और भ्रष्टाचार भी युवाओं में असन्तोष को बढ़ाने में अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान युवाओं के कुछ प्रमुख समस्याओं की भी जानकारी प्राप्त हुई है, अधिकांश युवा इन्हीं समस्याओं के परिणामस्वरूप असंतोष की ओर चले जाते हैं। ये समस्याएँ इस प्रकार हैं:

- **आर्थिक समस्या–** वर्तमान में युवकों की एक प्रमुख समस्या आर्थिक समस्या है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् युवक आर्थिक असुरक्षा महसूस करते हैं। अधिकांश युवकों को उनकी योग्यता के अनुरूप कार्य नहीं मिल पाता है। शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी की समस्या काफी गम्भीर है। पढ़ लिखकर भी अपने माता–पिता और स्वंय की आकांक्षाओं को पूर्ण कर पाने में असमर्थ हैं। भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद एवं आरक्षण ने इन युवाओं के समक्ष गंभीर समस्या उत्पन्न कर दिया है। बेकारी के साथ ही इन युवकों के साथ एक और समस्या निर्धनता है। चुकि प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के अर्न्तगत आने वाले अधिकांश युवा मध्यमवर्गीय परिवार से सम्बन्धित हैं। इन सभी समस्याओं ने आज युवकों में असन्तोष की स्थिति को उत्पन्न कर दिया है।
- **मद्यपान एवं मादक द्रव्य व्यसन की समस्या–** आज युवकों में मद्यपान व मादक द्रव्य व्यसनों की प्रवृत्ति दिनों दिन बढ़ती जा रही है। महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में आज तक किये गये सर्वेक्षण इस बढ़ती हुई प्रवृति को ही पुष्टि करते हैं। शराब पीना–पिलाना तथा मादक द्रव्यों को लेना इन युवाओं का आज फैशन बन गया है। प्रारंभिक समयों में तो ये युवाएँ अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। परन्तु धीरे–धीरे ये समस्याएँ इनमें कई प्रकार की निराशाओं व कुंठाओं को ग्रसित कर देता है। परिणामस्वरूप इनके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है और धीरे–धीरे ये आदतें इनमें इतनी अधिक मात्रा में घर कर जाती है कि इससे पीछे छुड़ा पाना इनके वश में नहीं रह जाता है और वे असन्तोष की श्रेणी में चले जाते हैं।
- **नैतिक मूल्यों में कमी–** आज अधिकतर युवकों में यह प्रवृति देखी जा रही है। नैतिकता के आधार पर उनका पतन हो चला है। आज अधिकांश युवक खाओं, पीओ और मौज करो की प्रवृत्ति में अधिक विश्वास करते हैं। इसी प्रवृति के कारण युवकों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण का अभाव पाया जाता है। आज नैतिक मूल्यों का सर्वत्र ह्रास हो रहा है।
- **अपराध में संलिप्तता–** ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो अपराध व्यापक असन्तोष, विद्रोह भावना तथा अनुशासनहीनता की अभिव्यक्ति है। आज कई तरह की अपराधों में युवाओं का महत्वपूर्ण हाथ देखा जा रहा है। इसके साथ ही युवा आज अपराधी प्रवृति की ओर ध्यान देना अधिक पसन्द कर रहा है जितना कि अपने चरित्र निर्माण व कैरियर के प्रति।

इसके साथ ही कई तरह की और समस्यायें हैं जिनसे युवा ग्रसित होते जा रहे हैं। आज फैशन, पहनावा–ओढ़ावा, रहन–सहन में आधुनिकता व पाश्चात्य दृष्टिकोण के प्रति युवाओं का ध्यान अत्यधिक मात्रा में आकर्षित हो रहा है। आज प्रत्येक युवा तथा छात्रों के हाथों में दो–तीन मोबाईल आम बात हो गयी है। आज इन्टरनेट पर अश्लीलता खुलेआम देखने को मिलते हैं नतीजतन युवाएँ आज साइबर कैफे व रेस्टोरेंट में जाना अधिक पसन्द करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान एक शिक्षक से प्रस्तुत अध्ययन के सम्बन्ध में बातचीत के दौरान पता चला कि आज कक्षाओं में प्रत्येक युवाओं (छात्रों) चाहे वह लड़का हो या लड़की हो कम से कम तीन बार मोबाईल उसके अवश्य बजते हैं। भले ही उनका मोबाईल साईलेन्ट मोड में क्यों न हो। एक शिक्षक जब वर्ग में बच्चों का वर्ग संचालन कराते हैं तो उन्हें पता चल ही जाता है कि एक छात्र का ध्यान किस ओर गया है। वर्ग तो वर्ग अब तो छात्रों के पास परीक्षा में भी मोबाईल ले जाना साधारण सी बात हो गई है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

अतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय युवाओं में असन्तोष बढ़ता जा रहा है और इस बढ़ते असन्तोष का ही परिणाम है कि युवा वर्ग उत्तेजनापूर्ण आन्दोलन की ओर प्रवृत होता जा रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात युवाओं ने हमारे विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्रों ने असमानता, शोषण, भ्रष्टाचार, पुलिस निरंकुशता, राजनीतिक सांठ–गाँठ, प्रशासनिक निर्दयता व धार्मिक कट्टरवाद आदि को आज तक सहन किया है, लेकिन सहनशीलता की भी एक सीमा होती है। अब युवाओं का धैर्य टूटता जा रहा है उनमें असन्तोष उफान का रूप ग्रहण करता जा रहा है।

वर्तमान समय में चाहे शिक्षा के क्षेत्र में युवा हों व रोजगार के क्षेत्र में हों व राजनीति के क्षेत्र में ही क्यों न हो उनमें असन्तोष की स्थिति देखने को मिलती है। कहा जाता है कि युवा ही भविष्य व देश के कर्णधार होते हैं और वे ही जब असन्तोष की स्थिति में हों तो भविष्य की परछाई बड़ा ही गड़बड़ देखने को मिलती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दीक्षित, डी0 के0; विद्यार्थी और मादक पदार्थ, रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर, 2000.
2. महाजन, धर्मवीर एवं महाजन, कमलेश; भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्यायें, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2006.
3. मदन, जी0 आर0; भारतीय सामाजिक समस्यायें, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005.
4. सचदेव, डी0 आर0; भारत में समाज कल्याण प्रशासन, किताब महल पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2009.
5. यादव, रामजी; भारतीय सामाजिक समस्यायें; अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005.
6. Chitta Ranjan, C. N.; Thought on Student Unrest. 'Social Determinants of Educability in India', edited by S. P. Ruhela, Reprint 2005.
7. S. M. Limpset & Altbach Philip in 'American Student Protest' in New Society, Nos, 205 and 206, Sept. 1996.

*****